18

श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र-VI

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने देवी ललिता के 1000 नामों में से कुछ नामों के विषय में जाना। इस पाठ में उनके अन्य नामों के विषय में जानेंगे।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- सूक्त में दिये श्लोकों का शुद्ध उच्चारण कर पाने में;
- देवी ललिता की विशेषताएं बता पाने में; और
- उनके नामों का अर्थज्ञान कर पाने में ।

18.1 श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र (151-164)

सत्य–ज्ञानानन्द–रूपा सामरस्य–परायणा ।
कपर्दिनी कलामाला कामधुक् कामरूपिणी ।। १५१।।

791) सत्यज्ञानानन्दरूपा – वह जो सत्य, ज्ञान और आनंद का परिचायक है

792) सामरस्यपरायणा – वह जो शांति से खड़ा है

793) कपर्दिनी – वह जो कपर्धी की पत्नी है (बाल वाले शिव)

794) कलामाला – वह जो कला को माला के रूप में पहनती है

795) कामधुक् – वह जो इच्छाओं को पूरा करती है

796) कामरूपिणी – वह जो किसी भी रूप ले सकता है

कलानिधिः काव्यकला रसज्ञा रसशेवधिः ।
पुष्टा पुरातना पूज्या पुष्करा पुष्करेक्षणा ।। १५२।।

797) कलानिधिः – वह जो सभी कलाओं का खजाना है

798) काव्यकला – वह जो लेखन की कला है

799) रसज्ञा – वह जो कला की सराहना करती है

800) रसशेवधिः – वह जो कलाओं का खजाना है

801) पुष्टा – वह जो स्वस्थ है

802) पुरातना – वह जो प्राचीन है

803) पूज्या – वह जो पूजने योग्य हो

804) पुष्करा – वह जो विपुल देता है

805) पुष्करेक्षणा – वह जिसके पास कमल के समान नेत्र हों

परंज्योतिः परंधाम परमाणुः परात्परा ।
पाशहस्ता पाशहन्त्री परमन्त्र–विभेदिनी ।। १५३ ।।

806) परंज्योतिः – वह जो परम प्रकाश है

807) परंधाम – वह परम विश्राम स्थल है

808) परमाणुः – वह जो परम परमाणु है

809) परात्परा – वह जो सबसे बेहतर से बेहतर है

810) पाशहस्ता – वह जिसके हाथ में रस्सी है

811) पाशहन्त्री – वह जो आसक्ति को काटता है

812) परमन्त्रविभेदिनी – वह जो मंत्र के प्रभाव को नष्ट करता है

मूर्ताऽमूर्ताऽनित्यतृप्ता मुनिमानस–हंसिका ।
सत्यव्रता सत्यरूपा सर्वान्तर्यामिनी सती ।। १५४ ।।

813) मूर्ति – वह जिसके पास एक रूप है

814) अमूर्तता – वह जिसके पास कोई फॉर्म नहीं है

815) अनित्यतृप्ता – वह जो अस्थायी चीजों का उपयोग करके प्रार्थनाओं से खुश हो जाता है

816) मुनिमानसहंसिका – वह ऋषियों के मन (झील जैसी) में हंस है

817) सत्यव्रता – वह जिसने केवल सच बोलने का संकल्प लिया है

818) सत्यरूपा – वह असली रूप है

819) सर्वान्तर्यामिनी– वह जो हर चीज के भीतर है

820) सती – वह दक्ष की पुत्री साठे है

ब्रह्माणी ब्रह्मजननी बहुरूपा बुधार्चिता ।

प्रसवित्री प्रचण्डाऽऽज्ञा प्रतिष्ठा प्रकटाकृतिः ।। १५५ ।।

821) ब्रह्माणी – वह जो निर्माता के पीछे ताकत है

822) ब्रह्म – वह निर्माता है

823) जननी – वह जो माँ है

824) बहुरूपा – वह जिसके कई रूप हैं

825) बुधार्चिता – वह जो प्रबुद्ध द्वारा पूजा की जा रही है

826) प्रसवित्री – वह जिसने सब कुछ जन्म दिया है

827) प्रचण्डा – वह जो बहुत गुस्से में है

828) आज्ञा – वह जो आदेश है

829) प्रतिष्ठा – वह जो स्थापित किया गया है

830) प्रकटाकृतिः – वह जो स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है

प्राणेश्वरी प्राणदात्री पञ्चाशत्पीठ–रूपिणी ।

विशघृङ्खला विविक्तस्था वीरमाता वियत्प्रसूः ।। १५६ ।।

831) प्राणेश्वरी – वह जो आत्मा की देवी है

832) प्राणदात्री – वह जो आत्मा देता है

833) पञ्चशत्पीठरूपिणी – वह पचास शक्तिपीठों में शामिल हैं, जैसे काम रोपा, वाराणसी। उज्जैन आदि

834) विशघृङ्खला – वह जंजीर नहीं है

835) विविक्तस्था – वह अकेली जगहों पर है

836) वीरमाता – वह हीरो की माँ है

837) वियत्प्रसुः – वह जिसने आकाश बनाया है

मुकुन्दा मुक्तिनिलया मूलविग्रह–रूपिणी ।

भावज्ञा भवरोगघ्नी भवचक्र–प्रवर्तिनी ।। १५७।।

838) मुकुन्दा – वह मोचन देता है

839) मुक्तिनिलया – वह मोचन की सीट है

840) मूलविग्रहरूपिणी – वह जो मूल प्रतिमा है

841) भावाज्ञा – वह जो इच्छाओं और विचारों को समझती है

842) भवरोगघ्नी – वह जन्म के पाप को ठीक करती है मिटाती है

843) भवचक्रवर्तिनी – वह जन्म के चक्र को घुमाती है

छन्दःसारा शास्त्रसारा मन्त्रसारा तलोदरी ।

उदारकीर्तिर् उद्दामवैभवा वर्णरूपिणी ।। १५८।।

844 छन्दःसारा – वह जो वेदों का अर्थ है

845) शास्त्रसारा – वह जो पुराणों का अर्थ है (महाकाव्य)

846) मन्त्रसारा – वह जो मंथरा का अर्थ है (मंत्र)

847) तलोदरी – वह एक छोटा पेट है

848) उदारकीर्तिर् – वह, जिसकी व्यापक और लंबी ख्याति है

849) उद्दामवैभवा – वह जिसके पास प्रसिद्धि है

850) वर्णरूपिणी – वह जो अक्षर की पहचान है

जन्ममृत्यु–जरातप्त–जनविश्रान्ति–दायिनी ।
सर्वोपनिष–दुद्–घुष्टा शान्त्यतीत–कलात्मिका ।। १५६।।

851) जन्ममृत्युजरातप्तजनविश्रान्तिदायिनी – वह जो जन्म, मृत्यु और उम्र बढ़ने के लिए रामबाण है

852) सर्वोपनिषदुद्ष्टा – वह जो उपनिषदों द्वारा सबसे महान घोषित किया जा रहा है

853) शान्त्यतीतकलात्मिका – वह जो शांति से भी बड़ी कला है

गम्भीरा गगनान्तस्था गर्विता गानलोलुपा ।
कल्पना–रहिता काष्ठाऽकान्ता कान्तार्ध–विग्रहा ।। १६०।।

854) गम्भीरा – वह जिसकी गहराई को मापा नहीं जा सकता

855) गगनान्तथा – वह जो आकाश में स्थित है

856) गर्विता – वह जो गर्व करता है

857) गानलोलुपा – वह जो गाने पसंद करती है

858) कल्पनारहिता – वह जो कल्पना नहीं करता है

859) काष्ठ – वह जो परम सीमा में है

860) अकांता – वह जो पापों को दूर करता है

861) कान्तार्धविग्रहा – वह जो अपने पति (कांथा) से आधी है

कार्यकारण–निर्मुक्ता कामकेलि–तरङ्गिता ।
कनत्कनकता–टङ्का लीला–विग्रह–धारिणी ।। १६१।।

862) कार्यकारणनिर्मुक्ता – वह जो कार्रवाई और कारण से परे है

863) कामकेलितरङ्गिता – वह जो परमेश्वर के खेल के समुद्र की लहरें हैं

864) कनत्कनकताटङ्का– वह जो सुनहरा कानों का स्टड पहनती है

865) लीलाविग्रहधारिणी – वह जो कई रूपों को खेल के रूप में मानती है

अजा क्षयविनिर्मुक्ता मुग्धा क्षिप्र–प्रसादिनी ।
अन्तर्मुख–समाराध्या बहिर्मुख–सुदुर्लभा ।। १६२।।

866) अजा – वह जिसके पास जन्म नहीं है

867) क्षयविनिर्मुक्ता – वह जिसके पास मृत्यु नहीं है

868) मुग्धा – वह खूबसूरत है

869) क्षिप्रप्रसादिनी– वह जो जल्दी प्रसन्न होती है

870) अन्तर्मुखसमाराध्या – वह जो आंतरिक विचारों से पूजी जाती है

871) बहिर्मुखसुदुर्लभा – वह जो बाहरी प्रार्थनाओं द्वारा प्राप्त किया जा सकता है

त्रयी त्रिवर्गनिलया त्रिस्था त्रिपुरमालिनी ।

निरामया निरालम्बा स्वात्मारामा सुधासृतिः ।। १६३ ।।

872) त्रयी – वह जो तीन वेदों अर्थात ऋक, यजुर और साम के रूप में है

873) त्रिवर्गनिलया – वह जो स्वयं, संपत्ति और आनंद के तीन पहलुओं में है

874) त्रिस्था – वह जो तीन में है

875) त्रिपुरमालिनी – वह जो त्रिपुरा में श्रीचक्र के छठे खंड में है।

876) निरामया – वह जो बिना रोगों के है

877) निरालम्बा – वह जिसे दूसरे जन्म की आवश्यकता नहीं है।

878) स्वात्मारामा – वह जो अपने भीतर आनंद लेती है

879) सुधासृतिः – वह जो अमृत की वर्षा है

संसारपङ्क–निर्मग्न–समुद्धरण–पण्डिता ।

यज्ञप्रिया यज्ञकर्त्री यजमान–स्वरूपिणी ।। १६४।।

880) संसारपङ्कनिर्मग्नसमुद्धरणपण्डिता – वह जो आज जीवन की मिट्टी में डूबे लोगों को बचाने में सक्षम है

881) यज्ञप्रिया – वह जो अग्नि बलिदान पसंद करती है

882) यज्ञकर्त्री – वह अग्नि यज्ञ करती है

883) यजमानस्वरूपिणी – वह जो अग्नि यज्ञ का कर्ता है

18.2 श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र (165-182)

धर्माधारा धनाध्यक्षा धनधान्य–विवर्धिनी ।

विप्रप्रिया विप्ररूपा विश्वभ्रमण–कारिणी ।। १६५।।

884) धर्माधारा – वह जो धर्म का आधार है–सही कार्रवाई

885) धनाध्यक्षा – वह जो धन की अध्यक्षता करता है

886) धनधान्यविवर्धिनी – वह जो धन और अनाज पैदा करता है

887) विप्रपिया – वह जो वेदों को सीखना पसंद करता है

888) विप्ररूपा – वह जो वेदों का ज्ञाता है

889) विश्वभ्रमणकारिणी– वह जो ब्रह्मांड को घूमने के लिए बनाता है

विश्वग्रासा विद्रुमाभा वैष्णवी विष्णुरूपिणी ।
अयोर्नि योनिनिलया कूटस्था कुलरूपिणी ।। १६६ ।।

890) विश्वग्रासा – वह जो एक मुट्ठी में ब्रह्मांड खाती है

891) विद्रुमाभा – वह जिसके पास मूंगा की चमक है

892) वैष्णवी – वह जो विष्णु की शक्ति है

893) विष्णुरूपिणी – वह जो विष्णु है

894) अयोर्नि – वह जो बिना उत्पत्ति का होवह जिसके पास कारण नहीं है या वह जो पैदा नहीं हुई है

895) योनिनिलया – वह जो हर चीज का कारण और स्रोत है

896) कूटस्था – वह जो स्थिर है

897) कुलरूपिणी – वह जो संस्कृति की पहचान है

वीरगोष्ठीप्रिया वीरा नैष्कर्म्या नादरूपिणी ।
विज्ञानकलना कल्या विदग्धा बैन्दवासना ।। १६७ ।।

898) वीरगोष्ठीप्रिया – वह जो हीरो की कंपनी पसंद करती है

899) वीरा – वह जिसके पास वीरता है

900) नैर्ष्म्या – वह जिसे कार्रवाई से लगाव नहीं है

901) नादरूपिणी – वह जो ध्वनि का रूप है

902) विज्ञानकलना – वह जो विज्ञान बनाता है

903) कल्य – वह जो कला में निपुण है

904) विदग्धा – वह जो एक विशेषज्ञ है

905) बैन्दवासना – वह जो हजार पंखों वाले कमल की बिंदी में बैठती है

तत्त्वाधिका तत्त्वमयी तत्त्वमर्थ–स्वरूपिणी ।

सामगानप्रिया सौम्या सदाशिव–कुटुम्बिनी ।। १६८ ।। वत सोम्या

906) तत्त्ववाधिका – वह जो सभी तत्वमीमांसा से ऊपर है

907) तत्त्वमयी – वह जो तत्त्वमीमांसा (अध्यात्मविज्ञान) है

908) तत्त्वमर्थस्वरूपिणी – वह जो इस और उस की पहचान है

909) सामगानप्रिया – वह जो साम का गाना पसंद करती है

910) सौम्या – वह जो शांतिपूर्ण है या वह जो चंद्रमा की तरह सुंदर है

911) सदाशिवकुटुम्बिनी – वह जो सदा शिवा की पत्नी है

सव्यापसव्य–मार्गस्था सर्वापद्विनिवारिणी ।

स्वस्था स्वभावमधुरा धीरा धीरसमर्चिता ।। १६६।।

912) सस्यापसव्यमार्गस्था – वह जो जन्म, मृत्यु और जीवन यापन है या वह जो पुरोहित और तांत्रिक विधियों को पसंद करती है

913) सर्वपद्विनिवारिणी – वह जो सभी खतरों को दूर करता है

914) स्वस्था – वह जो उसके भीतर सब कुछ है या वह जो शांत है

915) स्वभावमधुरा – वह स्वभाव से मीठा है

916) धीरा – वह साहसी है

917) धीरसमर्चिता – वह जो साहसी द्वारा पूजा की जा रही है

चौतन्यार्घ्‌य–समाराध्या चौतन्य–कुसुमप्रिया ।

सदोदिता सदातुष्टा तरुणादित्य–पाटला ।। १७०।।

918) चौतन्यार्घ्यसमाराध्या – वह जो पानी के त्याग से पूजी जाती है

919) चौतन्यकुसुमप्रिया – वह जो लुप्त होती फूलों को पसंद नहीं करती

920) सदोदिता – वह जो कभी सेट नहीं होता

921) सदातुष्टा – वह जो हमेशा खुश रहती है

922) तरुणादित्यपाटला – वह जवान बेटे को पसंद करती है जिसे सफेद रंग के साथ लाल मिलाया जाता है

दक्षिणा–दक्षिणाराध्या दरस्मेर–मुखाम्बुजा ।

कौलिनी–केवलाऽनर्घ्‌य–कैवल्य–पददायिनी ।। १७१।।

923) दक्षिणादक्षिणाराध्या – वह जो विद्वान और अज्ञानी है

924) दरस्मेरमुखम्बुजा – वह पूर्ण खिलने में कमल की तरह मुस्कुराता हुआ चेहरा है

925) कौलीनीकेवला – वह जो कोऊला और केवला विधियों का मिश्रण है

926) अनर्ध्यकैवल्यपददायिनी – वह जो स्वर्गीय कद काठी देता है

स्तोत्रप्रिया स्तुतिमती श्रुति–संस्तुत–वैभवा ।

मनस्विनी मानवती महेशी मङ्गलाकृतिः ।। १७२ ।।

927) स्तोत्रप्रिया – वह जो मंत्रों को पसंद करता है

928) स्तुतिमती – वह जो उसके भजन गाती है, उसके लिए वरदान देती है

929) श्रुतिसंस्तुतवैभवा – वह जो वेदों द्वारा पूजित है

930) मनस्विनी – वह जिसके पास स्थिर दिमाग है

931) मानवती – वह जिसके पास बड़ा दिल है

932) महेशी – वह सबसे बड़ी देवी हैं

933) मङ्गलाकृतिः – वह जो केवल अच्छा करती है

विश्वमाता जगद्धात्री विशालाक्षी विरागिणी ।
प्रगल्भा परमोदारा परामोदा मनोमयी ।। १७३ ।।

934) विश्वमाता – ब्रह्मांड की माँ

935) जगद्धात्री – वह दुनिया का समर्थन करती है

936) विशालाक्षी – वह व्यापक आंखों वाली है

937) विरागिणी – उसने त्याग किया है

938) प्रगल्भा – वह साहसी है

939) परमोदारा – वह महान दाता है

940) परामोदा – वह जिसके पास बहुत खुशी है

941) मनोमयी – वह जो मन से एक है

व्योमकेशी विमानस्था वज्रिणी वामकेश्वरी ।

पञ्चयज्ञ–प्रिया पञ्च–प्रेत–मञ्चाधिशायिनी ।। १७४ ।।

942) व्योमकेशी – वह शिव की पत्नी है, जिसके बाल आकाश हैं

943) विमानस्था – वह सबसे ऊपर है

944) वज्रणी – वह एक भाग के रूप में इंद्र की पत्नी है

945) वामकेश्वरी – वह जो वाममार्ग का अनुसरण करने वाले लोगों की देवी है

946) पञ्चयज्ञप्रिया – वह पाँच बलिदानों को पसंद करती है

947) पञ्चप्रेतमञ्चाधिशायिनी – वह पाँच लाशों से बनी चारपाई पर सोती है

पञ्चमी पञ्चभूतेशी पञ्च–संख्योपचारिणी ।

शाश्वती शाश्वतैश्वर्या शर्मदा शम्भुमोहिनी ।। १७५ ।।

948) पञ्चमी – वह पंच ब्रह्मा की पाँचवीं साध्वी की पत्नी है

949) पञ्चभूतेशी – वह पंच भुतों अर्थात पृथ्वी, आकाश, अग्नि, वायु का प्रमुख है। और पानी

950) पञ्चसंख्योपचारिणी – वह जिसे गंध (चंदन की लकड़ी), पुष्पा (फूल), धोपा (धूप), धेपा (प्रकाश), नैवेद्य (भेंट) के पांच तरीकों से पूजा जाना है

951) शाश्वती – वह जो स्थायी है

952) शाश्वतैश्वर्या – वह जो बारहमासी धन देता है

953) शर्मदा – वह जो आनंद देता है

954) शम्भुमोहिनी – वह जो भगवान शिव को देखती है

धरा धरसुता धन्या धर्मिणी धर्मवर्धिनी ।

लोकातीता गुणातीता सर्वातीता शमात्मिका ।। १७६ ।।

955) धरा – वह (जो पृथ्वी की तरह प्राणी है)

956) धरसुता – वह जो पहाड़ की बेटी है

957) धन्या – वह जिसके पास सभी प्रकार का धन हो

958) धर्मिणी – वह जो धर्म को पसंद करती है

859) धर्मवर्धिनी – वह जो धर्म को विकसित करता है

960) लोकातीता – वह जो दुनिया से परे है

961) गणातीता – वह जो गुणों से परे है

962) सर्वातीता – वह जो सब कुछ से परे है

963) शमात्मिका – वह जो शांति है

बन्धूक–कुसुमप्रख्या बाला लीलाविनोदिनी ।

सुमङ्गली सुखकरी सुवेषाढ्या सुवासिनी ।। १७७ ।।

964) बन्धूककुसुमप्रख्या – वह जिसके पास भंधूक फूलों की चमक है

965) बाला – वह एक युवा युवती है

966) लीलाविनोदिनी – वह जो खेलना पसंद करती है

967) सुमङ्गली – वह जो सभी अच्छी चीजें देता है

968) सुखकरी – वह जो खुशी देती है

969) सुवेषाढ्या – वह जो अच्छी तरह से बना है

970) सुवासिनी – वह जो सुगंधित है (विवाहित महिला)

सुवासिन्यर्चन–प्रीताऽऽशोभना शुद्धमानसा ।

बिन्दु–तर्पण–सन्तुष्टा पूर्वजा त्रिपुराम्बिका ।। १७८ ।।

971) सुवासिन्यर्चनप्रीता – वह जिसे विवाहित महिला की पूजा पसंद है

972) आशोभना – वह जिसके पास पूरी चमक है

973) शुद्धमानसा – वह जो एक साफ दिमाग है

974) बिन्दुतर्पणसन्तुष्टा – वह आनंद माया चक्र की बिंदी में प्रसन्नता के साथ

975) पूर्वजा – वह जो हर एक से पहले था

976) त्रिपुराम्बिका – वह तीन शहरों की देवी है

दशमुद्रा–समाराध्या त्रिपुराश्री–वशङ्करी ।

ज्ञानमुद्रा ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेय–स्वरूपिणी ।। १७६।।

977) दशमुद्रासमाराध्या – वह जो दस मुद्राओं (हाथ की मुद्राएँ) से पूजी जाती है

978) त्रिपुराश्रीवशङ्करी – वह देवी त्रिपुरा श्री को रखती है

979) ज्ञानमुद्रा – वह जो ज्ञान का प्रतीक दिखाती है

980) ज्ञानगम्या – वह जो ज्ञान द्वारा प्राप्त किया जा सकता है

981) ज्ञानज्ञेयस्वरूपिणी – वह जो सोचा और सोचा गया है

योनिमुद्रा त्रिखण्डेशी त्रिगुणाम्बा त्रिकोणगा ।

अनघाऽद्भुत–चारित्रा वाञ्छितार्थ–प्रदायिनी ।। १८०।।

982) योनिमुद्रा – वह जो खुशी का प्रतीक दिखाता है

983) त्रिखण्डेशी – वह अग्नि, चंद्रमा और सूर्य के तीन क्षेत्रों का स्वामी है

984) त्रिगुणा– वह तीन वर्ण हैं

985) अम्बा – वह जो माँ है

986) त्रिकोणगा – वह जो एक त्रिकोण के सभी कोने में प्राप्त किया है

987) अनघाट – वह जो पाप के पास नहीं है

988) अद्भुतचरित्रा – वह जो एक अद्भुत इतिहास है

989) वाञ्छितार्थप्रदायिनी – वह जो चाहती है वह देती है

अभ्यासातिशय–ज्ञाता षडध्वातीत–रूपिणी ।
अव्याज–करुणा–मूर्तिर् अज्ञान–ध्वान्त–दीपिका ।। १८१।।

990) अभ्यासातिशयज्ञानता – वह जो निरंतर अभ्यास से महसूस किया जा सकता है

991) षडध्वातीतरूपिणी – वह जो नमाज के छह तरीकों का पालन करता है

992) अव्याजकरुणामूर्तिर् – वह जो बिना कारण दया दिखाता है। वह जो शुद्ध दयालु है

993) अज्ञानध्वान्तदीपिका – वह दीपक है जो अज्ञानता को दूर भगाता है

श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र-VII

आबाल–गोप–विदिता सर्वानुल्लङ्घय–शासना ।
श्रीचक्रराज–निलया श्रीमत्–त्रिपुरसुन्दरी ।। १८२ ।।

994) आबालगोपविदिता – वह जो बच्चों और चरवाहों के सभी अधिकार से पूजित है

995) सर्वानुल्लङ्घयशासन – वह जिसके आदेशों की कभी अवज्ञा नहीं की जा सकती

996) श्रीचक्रराजनिल्या – वह श्रीचक्र में रहती है

997) श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी – धन की सुंदर देवी जो त्रिपुरा के भगवान की पत्नी हैं

श्रीशिवा शिव–शक्त्यैक्य–रूपिणी ललिताम्बिका ।
एवं श्रीललिता देव्या नाम्नां साहस्रकं जगुः ।।

998) श्रीशिवा – वह जो शाश्वत शांति है

999) शिवशक्त्यैक्यरूपिणी – वह जो शिव और शक्ति का एकीकरण है

1000) ललिताम्बिका – आसानी से स्वीकृत माँ

।। इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे उत्तरखण्डे श्रीहयग्रीवागस्त्यसंवादे श्रीललिता सहस्रनाम स्तोत्र कथनं सम्पूर्णम् ।।

पाठगत प्रश्न– 18.1

(1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. सत्य–ज्ञानानन्द–रूपा .... ।
2. कलानिधिः .... रसज्ञा रसशेवधिः ।
3. .... परंधाम परमाणुः परात्परा ।
4. ब्रह्माणी .... बहुरूपा बुधार्चिता ।
5. प्राणेश्वरी .... पञ्चाशत्पीठ–रूपिणी ।
6. छन्दःसारा .... मन्त्रसारा तलोदरी ।
7. गम्भीरा .... गर्विता गानलोलुपा ।
8. अजा .... मुग्धा क्षिप्र–प्रसादिनी ।
9. त्रयी त्रिवर्गनिलया त्रिस्था .... ।
10. .... धनाध्यक्षा धनधान्य–विवर्धिनी ।
11. तत्त्वाधिका .... तत्त्वमर्थ–स्वरूपिणी ।
12. स्तोत्रप्रिया .... श्रुति–संस्तुत–वैभवा ।
13. विश्वमाता .... विशालाक्षी विरागिणी ।
14. व्योमकेशी विमानस्था वज्रिणी .... ।
15. धरा धरसुता धन्या धर्मिणी .... ।

आपने क्या सीखा?

- श्लोकों का शुद्ध उच्चारण करना।
- देवी ललिता के लिए प्रयोग किये गये विशेषक शब्दों का अर्थज्ञान।
- देवी ललिता की विशेषताएं।

पाठांत प्रश्न

1. इस पाठ में दिये गये श्लोकों के आधार पर देवी ललीता की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

2. नीचे दिये गये पदों का अर्थ बताईये

   a) योनिनिलया

   b) वीरगोष्ठीप्रिया

   c) सामगानप्रिया

   d) सर्वापद्विनिवारिणी

   e) तरुणादित्य–पाटला

   f) मानवती

   g) परामोदा

   h) वामकेश्वरी

उत्तरमाला

18.1

1. सामरस्य–परायणा
2. काव्यकला
3. परंज्योतिः
4. ब्रह्मजननी
5. प्राणदात्री
6. शास्त्रसारा
7. गगनान्तस्था
8. क्षयविनिर्मुक्ता
9. त्रिपुरमालिनी
10. धर्माधारा
11. तत्त्वमयी
12. स्तुतिमती
13. जगद्धात्री
14. वामकेश्वरी
15. धर्मवर्धिनी